C Sponsored

Proceedings of the International Conference on Impact of Languages, Literature and Education on Intellectual Property Rights 2020

Feb 28-29, 2020

Organized by

SIR C R REDDY COLLEGE ELURU

Aided, Autonomous, CPE and Thrice Accredited with A Grade by NAAC
College with Potential for Excellence | An ISO 9001:2015 Certified Institution

in collaboration with

IMRF Institute of Higher Education & Research

www.imrfedu.org | Vijayawada, India

PROCEEDINGS OF THE INTERNATIONAL CONFERENCE ON IMPACT OF LANGUAGES, LITERATURES & EDUCATION ON INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS – 2020

Feb 28-29, 2020

ISBN 978-81-944859-5-7

Govt of India Approved Conference
(Govt of India Approved: MHA Vide : F.No 42180123/CC-1590 ; MEA : F.No. AA/162/01/2020-306)
UGC Sponsored – Autonomy Grant

Organized by

SIR C R REDDY COLLEGE
(Aided& Autonomous), Eluru, A.P
Affiliated to Adikavi Nannaya University, Rajamahendravaram
[Thrice Accredited with A Grade by NAAC]
College with Potential for Excellence
An ISO 9001:2015 Certified Institution

In collaboration with

IMRF INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION & RESEARCH, INDIA
www.imrfedu.org

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

मद्दाला जयलक्ष्मी

महिला लेखन के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैत्रेयी पुष्पा के सम्पूर्ण साहित्य मे स्त्री केन्द्र मे दिखाई देती है। वे नारी स्वतंत्रता की पक्षधर हैं। उन्होंने ग्रामीण समाज की नारी की सामाजिक स्थिति, वातावरण और उसकी समस्याओं से ही अवगत नहीं कराया बल्कि वे उन स्त्रियों की समस्याओं को सुलझाने में भी बल देती हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने नारी शक्ति के नए आयाम को खोजने का प्रयास किया है। अपने एक साक्षात्कार में वे कहती हैं– "उस पुरुष व्यवस्था से मुझे चिढ है जो स्त्री के चारों ओर बंधन डालती है। हजारों वर्षों से ज्यादा समय से देशी विदेशी आक्रमण की सीधी मार या सच कहूँ, तो दोहरी मार स्त्री पर पड़ती है। आक्रमणकारियों के अत्याचार, बलात्कार और उनके हरम की सजावट का समान। उधर घर में पुरुष का आहत अहं और सुरक्षा की घेराबंदी।"[1] अपने पूरे साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा ने नारी दशा पर प्रकाश डाला है।

***

मद्दाला जयलक्ष्मी

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
विजयवाडा, आंध्र प्रदेश

ISBN 978-81-944859-5-7